श्री अग्रसेन बी.एड. कॉलेज जामडोली का नवीन सत्र आरम्भ

जयपुर, 16 जनवरी। श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय में नव प्रशिक्षणार्थियों का सत्रारम्भ कार्यक्रम 15 जनवरी को वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। इस अवसर पर सत्र 2020–21 के एम.एड., बी.एड., बी.ए.–बी.एड., बीएससी.–बी.एड. एवं बी.एस.टी.सी. के प्रशिक्षणार्थियों ने ऑन–लाइन उपस्थिति प्रदान की।

सत्रारम्भ कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में केशव विद्यापीठ समिति के सचिव श्री ओमप्रकाश गुप्ता ने कहा कि जीवन निर्माण के लिए शिक्षा अहम घटक है। शिक्षक बनकर हम समाज की सेवा करें। श्री गुप्ता ने कहा कि हम जिस लक्ष्य को लेकर चले है उसे पूर्ण करना है। सत्रारम्भ कार्यक्रम में केशव विद्यापीठ का परिचय प्राचार्य प्रो. रीटा शर्मा ने करवाते हुए कहा कि केशव विद्यापीठ समाज में संस्कारवान छात्र, शिक्षक प्रदान करने का कार्य सतत कर रही है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. जे.पी.सिंघल ने कहा कि लक्ष्य बड़ा रहना चाहिए। विचार और कर्म की शुद्धता व्यक्ति को महान बनाती है। निरन्तर मेहनत व संघर्ष से श्रेष्ठ लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। हमारे आदर्श महापुरुष हैं, उनसे प्रेरणा लेनी है। राष्ट्र निर्माण में बालक की भूमिका महत्वपूर्ण है। श्रेष्ठ बालकों के निर्माण का गुरुत्तर दायित्व शिक्षक का है। सत्रारम्भ कार्यक्रम में केशव विद्यापीठ समिति के संयुक्त सचिव श्री अमरनाथ चंगोत्रा, महाविद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष डॉ. रामकरण शर्मा, मंत्री श्री सूर्यनारायण सैनी की गरिमामयी उपस्थिति रही। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अशोक कुमार सिडाना ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा ने किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

द्वितीय दिवस 16 जनवरी को नवीन प्रशिक्षणार्थियों का अभिनवन कार्यक्रम रखा गया। अभिनवन कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रो. बी.एल.जैन विभागध्यक्ष, जैन विश्वभारती, लाडनू नागौर रहे। प्रो. जैन ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान करते हुए बताया कि आज के विद्यार्थियों को नई सोच पैदा करके नवीन विचारों को अपनाना चाहिए। सभी प्रशिक्षणार्थियों को अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर पूर्ण एकाग्रता से कार्य करने पर जल्दी सफलता मिलती है। जीवन में नवीन विचार, नई सोच, अच्छे व्यक्तियों के साथ रहेंगे तो हमें नई ऊर्जा मिलेगी जिससे हमारा व्यवहार, व्यक्तित्व एवं कार्य अच्छा बनता है। वर्तमान युग में नए हुनर के साथ अपने कार्य को करना चाहिए जिससे हमारे जीवन में नवीनता आए। अपने दैनिक कार्यों की योजना बनाकर समय का सदुपयोग करना चाहिए।

इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता का परिचय महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. रीटा शर्मा द्वारा कराया गया। मंच संचालन डॉ. प्रमोद शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सतीश मंगल द्वारा किया गया।

दूसरे सत्र में संकाय सदस्यों का संक्षिप्त परिचय प्राचार्य प्रो. रीटा शर्मा द्वारा कराया गया और संबंधित संकाय सदस्य द्वारा अपने दायित्वों की जानकारी विद्यार्थियों को विस्तार से ऑन–लाइन प्रदान की गई।

तृतीय दिवस 18 जनवरी को शेष सकाय सदस्यों का परिचय डॉ. अशोक सिडाना द्वारा करवाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के पूर्व छात्रों द्वारा अपने कार्यस्थल से ऑन–लाइन उपस्थिति प्रदान कर महाविद्यालय के संबंध में अपने अनुभव साझा करते हुए नव प्रशिक्षणार्थियों को बधाई दी कि उनका प्रवेश देश के इस श्रेष्ठ महाविद्यालय में हुआ है।

चतुर्थ दिवस समापन सत्र महाविद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष डॉ. रामकरण शर्मा एवं प्राचार्य प्रो. रीटा शर्मा के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। डॉ. रामकरण शर्मा द्वारा शिक्षा कैसी हो ?, शिक्षक कैसा हो? एवं शिक्षार्थी के विषय में विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से विचार प्रस्तुत किए। आपने कहा केवल विषय का ज्ञान देना पूर्ण नहीं है। अपितु विद्यार्थी को व्यावहारिक ज्ञान भी प्रदान किया जाए। साथ ही आपने बताया कि जब शिक्षक का व्यवहार उत्तम होगा तभी विद्यार्थी भी श्रेष्ठ व्यवहार को आत्मसात कर सकेंगे। आपने भगवान राम का उदाहरण देते हुए विद्यार्थियों में बडों के प्रति आदर, सहनशीलता, समभाव, नेतृत्व क्षमता का भाव विकसित करने की आवश्यकता जताई।

समापन अवसर पर एम.एड, बी.एड., बी.ए.–बी.एड., बीएससी.–बी.एड. एवं बी.एस.टी.सी. के प्रशिक्षणार्थियों ने कविता, गीत आदि के माध्यम से सांस्कृतिक–साहित्यिक प्रस्तुतियाँ प्रदान कीं।